पाठ्यपुस्तक : क्षितिज भाग-1

(गद्य-खंड)

दो बैलों की कथा (प्रेमचंद)

पाठ का परिचय

मुंशी प्रेमचंद की कहानी **'दो बैलों की कथा'** प्राणिमात्र के प्रति मानवीय संवेदनाओं को व्यक्त करती भावप्रधान कहानी है। इस कहानी में लेखक ने जहाँ कृषक समाज और पशुओं के भावात्मक संबंध का वर्णन किया है, वहीं यह भी संदेश दिया है कि स्वतंत्रता सहज नहीं मिलती, उसके लिए बार-बार संघर्ष करना पड़ता है। इस प्रकार यह कहानी परोक्ष रूप से स्वतंत्रता-आंदोलन की भावना से भी जुड़ी है। प्रेमचंद ने इस कहानी में हीरा और मोती दो बैलों को पात्र के रूप में प्रस्तुत करके 'पंचतंत्र' और 'हितोपदेश' की कथा-परंपरा को भी विकसित किया है।

पाठ का सारांश

'दो बैलों की कथा' प्रेमचंद जी द्वारा रचित एक बहुत प्रसिद्ध कहानी है। कथा के प्रमुख पात्र दो बैल हैं, जिनके नाम हैं–हीरा और मोती। ये बैल सीधे-सादे, सरल स्वभाव के भारतीयों के प्रतीक हैं। बैलों के आपसी वार्त्तालाप से कथाकार ने परतंत्र भारतीयों की दासता की पीड़ा को मुखरित किया है। लेखक ने गुलाम भारतीयों को संदेश दिया है कि आज़ादी के लिए लगातार संघर्ष करना पड़ता है, वह सहजता से प्राप्त नहीं होती। तत्कालीन भारतीय स्वतंत्रता-आंदोलन के लिए भारतीयों को परोक्ष रूप से प्रेरित करती यह कहानी 'पंचतंत्र' की शैली में रची गई है, जिसमें पशु मानवों की तरह सोचते हैं और बोलते-बतियाते हैं। इसके अतिरिक्त हीरा और मोती नामक बैलों के अपने मालिक से आत्मीय संबंध दिखाकर भारतीय कृषक के पशुओं से भावनात्मक लगाव को भी प्रदर्शित किया गया है। कथा का सारांश इस प्रकार है–

बैल : एक सीधा-सादा जानवर–जानवरों में गधे को अपनी असीम सहनशीलता और सीधेपन के कारण संसार में सबसे बुद्धिहीन जानवर माना जाता है। सुख-दुख, हानि-लाभ का उस पर जैसे कोई प्रभाव ही नहीं पड़ता, मगर सीधापन संसार के लिए उपयुक्त नहीं है। सीधेपन के कारण ही अफ्रीका और अमेरिका जैसे देशों में भारतीयों को अपमान सहना पड़ता है। गधे से कुछ-कम सीधा एक और जानवर है–बैल। इसका स्थान गधे से कुछ कम नीचा इसलिए है कि यह कभी-कभी अड़ भी जाता है।

हीरा-मोती सच्चे मित्र–झूरी काछी के पास दो बैल थे–हीरा और मोती। ये दोनों पछाईं जाति के सुंदर, सुडौल और चौकस बैल थे। वे बड़े दिनों से एक साथ रह रहे थे। इसका परिणाम यह था कि उनमें साहचर्यगत प्रेम पनप गया था। वे साथ-साथ खाते और कभी-कभी विनोद-भाव से आपस में सींग भी मिला लिया करते थे। वे एक-दूसरे को चाटकर या सूँघकर प्रेम प्रकट करते थे। वे एक-दूसरे के मन की बात भी जान लेते थे।

हीरा-मोती गलतफ़हमी के शिकार–झूरी के साले की माँग पर संयोग से झूरी ने बैलों को उसके साथ भेज दिया। बैलों ने समझा कि उनके मालिक ने उन्हें बेच दिया है। इसी गलतफ़हमी में वे झूरी के साले के साथ जाने में असहयोग करने पर तुल गए। वे अड़ गए। झूरी का साला उन्हें आगे धकेलता तो वे पीछे को ज़ोर लगाते। किसी तरह झींकते-झिंकाते वे शाम तक नए घर में पहुँचे। झूरी के साले ने उन्हें चारा डाला, परंतु उन्होंने उसमें मुँह तक न दिया। नया स्थान उन्हें बेगाना-सा लगा।

हीरा-मोती पुनः झूरी के घर–दोनों बैलों का मन वहाँ एक पल भी नहीं लगा। वे आँखों-आँखों में आपस में सलाह-मशविरा करके रात के समय पगहा तोड़कर झूरी के घर की ओर निकल भागे। झूरी ने बैलों को सुबह चरनी पर देखा तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। बैलों की आँखों में विद्रोहभरा स्नेह था। घर-गाँव में बैलों की वापसी से खुशी छा गई। झूरी की पत्नी को बैलों का इस तरह वापस आना फूटी आँख नहीं सुहाया। वह उन्हें नमकहराम कहने लगी। गुस्से में उसने नौकरों को सूखा चारा बैलों के आगे डालने की हिदायत कर दी। बैलों ने उसे छुआ तक नहीं। झूरी ने नौकर को चारे में खली डालने को कहा, परंतु उसने मालकिन के निर्देश की अवहेलना करना उचित न समझा। बेचारे बैल भूखे ही रह गए।

हीरा-मोती पुनः झूरी की ससुराल में–झूरी का साला दूसरे दिन फिर दोनों बैलों को अपने संग लिवा ले गया। इस बार उसने दोनों को मोटी-मोटी रस्सियों से बाँधा और उनके सामने सूखा चारा डाल दिया। बैलों को इस व्यवहार में अपना घोर अपमान प्रतीत हुआ। अगले दिन उन्होंने हल में जुतने से इनकार कर दिया। झूरी के साले ने हीरा की नाक पर खूब डंडे बरसाए, परंतु दोनों बैल टस-से-मस न हुए। हीरा को पिटते देख मोती को गुस्सा आ गया, वह हल लेकर भागा। रस्सी, हल, जुआ, जोत सब कुछ टूट-टाट गया। बैल भागे तो परंतु लंबी रस्सियों के कारण अंततः पकड़े गए।

बैल फिर भागे–बैलों को भागने की सज़ा के तौर पर सुबह के समय सूखा चारा मिला, वह भी बहुत कम। शाम के समय भैरो की लड़की दो रोटियाँ लेकर आई। उन रोटियों से उन्हें कुछ तृप्ति मिली। बैलों ने जान लिया कि यह लड़की भैरो की दूसरी पत्नी–सौतेली माँ की सताई हुई है। मोती को उसके प्रति दया उमड़ी। वह सोचने लगा कि बेटी को सताने वाले भैरो या उसकी पत्नी को उठाकर पटक दे, परंतु हीरा ने समझाया कि ऐसा करने से वह लड़की अनाथ हो जाएगी। लड़की का स्नेह याद करके वे दोनों चुप रह जाते।

रात में उन्होंने फिर से भागने की सोची। वे धीरे-धीरे रस्सी को चबाकर कमज़ोर करने लगे। तभी नन्हीं लड़की ने आकर उनकी रस्सियाँ खोल दीं और बाद में शोर मचाया कि फूफावाले बैल भागे जा रहे हैं, उन्हें पकड़ो।

हीरा-मोती भागे जा रहे थे। गया उनका पीछा करने दौड़ा। गाँव के और लोग भी उन्हें पकड़ने भागे। इसी दौड़-भाग में दोनों रास्ता भटक गए। नए-नए गाँव पार करते वे एक मटर के खेत में पहुँच गए। वहाँ खूब मटर खाई और फिर उछल-कूद में लग गए।

साँड से भिड़ंत–उनके इस आनंद में अचानक एक बाधा आ गई। एक साँड उधर आ गया। वे सोचने लगे कि इससे कैसे मुकाबला करें। हीरा ने मोती को सलाह दी कि दोनों मिलकर आक्रमण करें। साँड एक पर सींग चलाता तो दूसरा उसके पेट में सींग घुसेड़ देता। साँड को शायद दो शत्रुओं से एकसाथ मुकाबला करने की आदत नहीं थी। दोनों बैलों के लगातार आक्रमण से थोड़ी ही देर में साँड बेजान-सा होकर गिर पड़ा। तब दोनों ने दयावश उसे छोड़ दिया।

हीरा-मोती कांजीहौस में–जीत के नशे में दोनों बैल मटर के खेतों में फिर घुस पड़े। इसी बीच दो आदमी लाठियाँ लेकर आ धमके। हीरा किनारे पर था, वह भाग निकला, पर मोती कीचड़ में धँस गया और पकड़ा गया। जब हीरा को यह अहसास हुआ कि मोती संकट में है, तब वह भी वापस लौट पड़ा। खेत के रखवालों ने दोनों को पकड़ लिया और कांजीहौस में बंद करा दिया।

कांजीहौस में बैलों की बुरी हालत–कांजीहौस में बैलों को खाने के लिए कुछ भी नहीं दिया गया। वहाँ पर पहले से ही भैंसें, बकरियाँ, घोड़े तथा गधे थे। भूख-प्यास से सभी का दम निकला जा रहा था। बढ़ती हुई भूख और निरादर की व्यथा ने दोनों के मन में विद्रोह की ज्वाला धधका दी। हीरा ने बाड़े की कच्ची दीवार पर सींगों से वार करना शुरू कर दिया। हर वार में थोड़ी-बहुत मिट्टी गिर जाती। तभी चौकीदार ने लालटेन के प्रकाश में हीरा का उजड्डपन देखा तो वह उसे डंडे से पीटकर तथा खूब मोटी रस्सी से बाँधकर चला गया। मोती ने उसे चिढ़ाया। हीरा ने जवाब में कहा–बँध गए तो क्या हुआ! अगर दीवार टूट जाती तो कई जानें आज़ाद हो जातीं। यह सुनकर मोती को भी जोश आ गया। उसने भरपूर ताकत से दीवार में सींग मारे। दो घंटे की लगातार मेहनत और शक्तिशाली चोटों से उसने लगभग आधी दीवार गिरा दी।

दीवार गिरते ही सारे जानवरों की जान-में-जान आई। सबसे पहले घोड़ियाँ भाग निकलीं। इसके बाद बकरियाँ और भैंसें भागीं। गधे वहीं खड़े रहे। बोले–भागने से क्या फ़ायदा, फिर पकड़े जाएँगे। मोती ने उन्हें सींग मार-मारकर बाहर भगाया। समस्या खड़ी हुई हीरा के लिए, क्योंकि वह रस्सी से बँधा हुआ था, कैसे भागता! वह मोती से बोला कि वह भाग जाए, वरना चौकीदार खूब पिटाई करेगा। मोती बोला–मैं विपदा के समय तुम्हें अकेला कैसे छोड़ सकता हूँ! फिर वह वहीं सो गया। कांजीहौस की हालत देख सुबह वहाँ के कर्मचारियों में खलबली मच गई। इसका कर्त्ता-धर्ता मोती को मानकर उसकी खूब पिटाई हुई और फिर उसे भी मोटी रस्सियों से बाँध दिया गया।

हीरा-मोती नए मालिक के हाथों में–एक सप्ताह तक दोनों कांजीहौस में बँधे पड़े रहे। खाने को कुछ नहीं, बस पूरे दिन में एक बार पीने को पानी मिलता था। दोनों की ठठरियाँ निकल आईं। नीलामी के दिन उनका दुर्बल शरीर देखकर उन्हें खरीदने के लिए कोई आगे न आया। अंततः एक व्यक्ति ने उन्हें खरीद लिया। अपने नए मालिक के प्रति उनका हृदय घृणा से भर गया था। वह उनके कूल्हे में उँगली घुसेड़कर गोद-गोदकर जिस तरह उनका मुआयना कर रहा था, उससे नए मालिक की निर्दयता का उन्हें अहसास हो गया था। वे भयभीत हो गए, पर विवश थे।

नीलामी के पश्चात् दोनों नए मालिक के साथ अपने भाग्य को कोसते चलने लगे। वह उन्हें भगाए लिए जाता था। रास्ते में उन्होंने गाय-बैलों का रेवड़ देखा। उसमें सभी जानवर प्रसन्न होकर मस्ती में उछल-कूद कर रहे थे। हीरा-मोती के मन में आया कि वे सब कितने स्वार्थी हैं, इन्हें अपने ही भाई-बंधुओं की तनिक भी चिंता नहीं है।

हीरा-मोती झूरी के द्वार पर–वे चलते जा रहे थे कि उन्हें लगा कि रास्ता कुछ जाना-पहचाना है। उनके निर्बल शरीरों में जैसे जान आ गई। वे तेज़ी से भागने लगे। नया मालिक कुछ समझ पाता, इसके पहले वे अपने पुराने मालिक झूरी के घर के नज़दीक आ गए और भागते हुए थान पर आकर खड़े हो गए। बैलों को आया देख झूरी उन्हें गले लगाने दौड़ा। मालिक का स्पर्श पाकर एक झूरी के हाथ चाटकर अपना स्नेह प्रदर्शित करने लगा। तब तक नया मालिक वहाँ पहुँच गया और उनकी रस्सियाँ पकड़कर बोला कि ये बैल मेरे हैं, मैं इन्हें नीलामी से लाया हूँ। झूरी बोला कि ये बैल मेरे हैं। नया मालिक उन्हें ज़बरन ले जाने लगा तो मोती ने उस पर सींग से प्रहार कर दिया। नया मालिक भागा। मोती ने तब उसे और दौड़ाया और दौड़ा-दौड़ाकर गाँव से दूर भगा दिया।

झूरी की प्रसन्नता का कोई ठिकाना न रहा। उसने उल्लास में भरकर दोनों के लिए नाँदों में खली, भूसा, चोकर और दाना तैयार कर दिया। दोनों बैल प्रसन्नता से खाने लगे। बैलों को वापस गाँव लौटा जानकर पूरे गाँव में उल्लास छा गया। झूरी की पत्नी भी अपने को रोक न सकी। उसने आकर दोनों के माथे चूम लिए।

भाग-1

(बहुविकल्पीय प्रश्न)

गद्यांशों पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

(1) जानवरों में गधा सबसे ज़्यादा बुद्धिहीन समझा जाता है। हम जब किसी आदमी को परले दरजे का बेवकूफ़ कहना चाहते हैं तो उसे गधा कहते हैं। गधा सचमुच बेवकूफ़ है, या उसके सीधेपन, उसकी निरापद सहिष्णुता ने उसे यह पदवी दे दी है, इसका निश्चय नहीं किया जा सकता। गायें सींग मारती हैं, ब्याही हुई गाय तो अनायास ही सिंहनी का रूप धारण कर लेती है। कुत्ता भी बहुत गरीब जानवर है, लेकिन कभी-कभी उसे भी क्रोध आ ही जाता है, किंतु गधे को कभी क्रोध करते नहीं सुना, न देखा। जितना चाहो गरीब को मारो, चाहे जैसी खराब, सड़ी हुई घास सामने डाल दो, उसके चेहरे पर कभी असंतोष की छाया भी न दिखाई देगी।

1. जानवरों में सबसे बुद्धिहीन किसे समझा जाता है–

(क) कुत्ते को (ख) गधे को
(ग) ऊँट को (घ) बकरी को।

2. किसी बुद्धिहीन व्यक्ति की तुलना किससे की जाती है–

(क) हाथी से (ख) ऊँट से
(ग) गधे से (घ) कुत्ते से।

3. गधे की कौन-सी विशेषता उसे अन्य पशुओं से अलग करती है–

(क) उसका सीधापन और सहिष्णुता
(ख) उसकी सुंदरता
(ग) उसकी आवाज़
(घ) उसकी सबलता।

4. ब्याही हुई गाय किसका रूप धारण कर लेती है–

(क) हिरणी का (ख) बिल्ली का
(ग) सिंहनी का (घ) बकरी का।

5. गधे के चेहरे पर कभी क्या दिखाई नहीं देता–

(क) संतोष (ख) असंतोष
(ग) खुशी (घ) क्रोध।

उत्तर– **1.** (ख) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (ख)

(2) झूरी काछी के दोनों बैलों के नाम थे हीरा और मोती। दोनों पछाईं जाति के थे–देखने में सुंदर, काम में चौकस, डील में ऊँचे। बहुत दिनों साथ रहते-रहते दोनों में भाईचारा हो गया था। दोनों आमने-सामने या आस-पास बैठे हुए एक-दूसरे से मूक-भाषा में विचार-विनिमय करते थे। एक-दूसरे के मन की बात कैसे समझ जाते थे, हम नहीं कह सकते। अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है। दोनों एक-दूसरे को चाटकर और सूँघकर अपना प्रेम प्रकट करते, कभी-कभी दोनों सींग भी मिला लिया करते थे–विग्रह के नाते से नहीं, केवल विनोद के भाव से, आत्मीयता के भाव से, जैसे दोस्तों में घनिष्ठता होते ही धौल-धप्पा होने लगता है। इसके बिना दोस्ती कुछ फुसफुसी, कुछ हल्की-सी रहती है, जिस पर ज़्यादा विश्वास नहीं किया जा सकता।

1. झूरी काछी के कितने बैल थे–

(क) एक (ख) दो
(ग) तीन (घ) चार।

2. झूरी के बैलों के क्या नाम थे–

(क) मोती और माणिक (ख) हीरा और मोती
(ग) सोना और चाँदी (घ) गोरा और काला।

3. **दोनों बैलों की विशेषता थी–**
   (क) देखने में सुंदर (ख) काम में चौकस
   (ग) डील में ऊँचे (घ) ये सभी।
4. **दोनों बैल परस्पर विचार-विनिमय कैसे करते थे–**
   (क) बोलकर (ख) सींग लड़ाकर
   (ग) मूक-भाषा में (घ) संकेत द्वारा।
5. **जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला कौन है–**
   (क) बंदर (ख) भालू
   (ग) मनुष्य (घ) सिंह।

उत्तर– 1. (ख) **2.** (ख) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (ग)।

(3) अपना यों बेचा जाना उन्हें अच्छा लगा या बुरा, कौन जाने, पर झूरी के साले गया को घर तक गोईं ले जाने में दाँतों पसीना आ गया। पीछे से हाँकता तो दोनों दाएँ-बाएँ भागते, पगहिया पकड़कर आगे से खींचता तो दोनों पीछे को ज़ोर लगाते। मारता तो दोनों सींग नीचे करके हुँकारते। अगर ईश्वर ने उन्हें वाणी दी होती तो झूरी से पूछते–तुम हम गरीबों को क्यों निकाल रहे हो? हमने तो तुम्हारी सेवा करने में कोई कसर नहीं उठा रखी। अगर इतनी मेहनत से काम न चलता था तो और काम ले लेते। हमें तो तुम्हारी चाकरी में मर जाना कबूल था। हमने कभी दाने-चारे की शिकायत नहीं की। तुमने जो कुछ खिलाया, वह सिर झुकाकर खा लिया, फिर तुमने हमें इस ज़ालिम के हाथ क्यों बेच दिया?

1. **बैलों को किसके साथ भेज दिया गया–**
   (क) झूरी के भाई के साथ (ख) झूरी के मित्र के साथ
   (ग) झूरी के साले के साथ (घ) झूरी के मामा के साथ।
2. **गया जब बैलों को पीछे से हाँकता तो वे क्या करते थे–**
   (क) तेज़ी से आगे को दौड़ते
   (ख) दाएँ-बाएँ भागते
   (ग) खड़े हो जाते
   (घ) सींग नीचे करके हुँकारते।
3. **यदि ईश्वर ने हीरा-मोती को वाणी दी होती तो वे झूरी से क्या पूछते–**
   (क) तुम हम गरीबों को क्यों निकाल रहे हो?
   (ख) हमने तुम्हारी सेवा में क्या कसर रखी है?
   (ग) हमने कभी दाने-चारे की शिकायत नहीं की।
   (घ) उपर्युक्त सभी।
4. **हीरा और मोती ने गया को पूरे रास्ते परेशान क्यों किया–**
   (क) उन्हें लगा उनके मालिक (झूरी) ने उन्हें गया को बेच दिया है।
   (ख) हीरा और मोती को गया अच्छा इंसान नहीं लगा था।
   (ग) हीरा और मोती को वह रास्ता मालूम नहीं था।
   (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।
5. **'दाँतों पसीना आना' मुहावरे का अर्थ है–**
   (क) थक जाना (ख) बहुत परिश्रम करना
   (ग) हार जाना (घ) इच्छा पूरी होना।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (ख) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (ख)।

(4) झूरी प्रातःकाल सोकर उठा तो देखा कि दोनों बैल चरनी पर खड़े हैं। दोनों की गरदनों में आधा-आधा गराँव लटक रहा है। घुटने तक पाँव कीचड़ से भरे हैं और दोनों की आँखों में विद्रोहमय स्नेह झलक रहा है।

झूरी बैलों को देखकर स्नेह से गद्गद हो गया। दौड़कर उन्हें गले लगा लिया। प्रेमालिंगन और चुंबन का वह दृश्य बड़ा ही मनोहर था।

घर और गाँव के लड़के जमा हो गए और तालियाँ बजा-बजाकर उनका स्वागत करने लगे। गाँव के इतिहास में यह घटना अभूतपूर्व न होने पर भी महत्त्वपूर्ण थी। बाल-सभा ने निश्चय किया, दोनों पशु-वीरों को अभिनंदन-पत्र देना चाहिए। कोई अपने घर से रोटियाँ लाया, कोई गुड़, कोई चोकर, कोई भूसी।

1. **झूरी ने प्रातःकाल दोनों बैलों को कहाँ खड़े देखा–**
   (क) द्वार पर (ख) चरनी पर
   (ग) कुएँ पर (घ) सड़क पर।
2. **दोनों बैलों की आँखों में क्या झलक रहा था–**
   (क) क्रोध का भाव (ख) विद्रोहमय स्नेह
   (ग) घृणा का भाव (घ) दया का भाव।
3. **दोनों बैलों को देखकर झूरी की क्या दशा हुई–**
   (क) रोने लगा (ख) चिल्लाने लगा
   (ग) स्नेह से गद्गद हो गया (घ) क्रोध में जलने लगा।
4. **घर और गाँव के लड़कों ने बैलों का स्वागत कैसे किया–**
   (क) तिलक लगाकर (ख) मालाएँ पहनाकर
   (ग) तालियाँ बजाकर (घ) फूलों की वर्षा करके।
5. **बच्चे अपने घर से बैलों के लिए क्या लाए–**
   (क) रोटियाँ (ख) गुड़
   (ग) चोकर-भूसी (घ) ये सभी।

उत्तर– 1. (ख) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (घ)।

(5) दोनों बैलों का ऐसा अपमान कभी न हुआ था। झूरी इन्हें फूल की छड़ी से भी न छूता था। उसकी टिटकार पर दोनों उड़ने लगते थे। यहाँ मार पड़ी। आहत-सम्मान की व्यथा तो थी ही, उस पर मिला सूखा भूसा! नाँद की तरफ़ आँखें तक न उठाईं।

दूसरे दिन गया ने बैलों को हल में जोता, पर इन दोनों ने जैसे पाँव न उठाने की कसम खा ली थी। वह मारते-मारते थक गया, पर दोनों ने पाँव न उठाया। एक बार जब उस निर्दयी ने हीरा की नाक पर खूब डंडे जमाए तो मोती का गुस्सा काबू के बाहर हो गया। हल लेकर भागा। हल, रस्सी, जुआ, जोत, सब टूट-टाटकर बराबर हो गया। गले में बड़ी-बड़ी रस्सियाँ न होतीं तो दोनों पकड़ाई में न आते।

1. **दोनों बैलों का क्या अपमान हुआ–**
   (क) उन्हें गालियाँ दी गईं
   (ख) उन्हें मार पड़ी और सूखा भूसा मिला
   (ग) उन्हें धूप में बाँधा गया
   (घ) उपर्युक्त सभी।
2. **आहत सम्मान की व्यथा के कारण बैलों ने क्या किया–**
   (क) गया को सींगों से मारा
   (ख) गया के घर से भाग गए
   (ग) नाँद की तरफ़ आँखें तक न उठाईं
   (घ) आँखों से आँसू टपकाने लगे।
3. **दूसरे दिन गया ने बैलों को कहाँ जोता–**
   (क) हल में (ख) गाड़ी में
   (ग) रहट में (घ) कोल्हू में।
4. **दोनों बैलों ने क्या कसम खा ली थी–**
   (क) पानी न पीने की (ख) पाँव न रोकने की
   (ग) पाँव न उठाने की (घ) भूसा न खाने की।
5. **निर्दयी गया ने क्या किया–**
   (क) मोती को डंडे से पीटा
   (ख) हीरा की नाक पर खूब डंडे जमाए
   (ग) हीरा के कान मरोड़ दिए
   (घ) मोती की नाक बंद कर दी।

उत्तर– 1. (ख) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (ख)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. इस कहानी के लेखक हैं–
   (क) प्रेमचंद (ख) जाबिर हुसैन
   (ग) राजेश जोशी (घ) ओमप्रकाश।
2. 'दो बैलों की कथा' हमें सीख दे रही है–
   (क) शत्रु को शत्रु समझना उचित है
   (ख) मालिक की सेवा करते रहना
   (ग) आज़ादी के लिए स्वयं लड़ना
   (घ) दूसरों के अत्याचार सहते रहना।
3. ''लेकिन किसी औरत पर सींग चलाना मना है'' यह कथन हैं–
   (क) मोती का (ख) गाय का
   (ग) हीरा का (घ) झूरी का।
4. गया झूरी का क्या लगता था–
   (क) भाई (ख) मामा
   (ग) दोस्त (घ) साला।
5. हीरा-मोती गया के घर से पहली बार क्यों भागे–
   (क) उन्हें गया और उसका घर अच्छा नहीं लगा
   (ख) गया गरीब था
   (ग) हीरा-मोती को वहाँ सब कुछ पराया-सा लगा और वह जगह उनकी नहीं थी।
   (घ) गया के डर से।
6. ''यह हमारी जाति का धर्म नहीं है'' यह कथन किसने और किससे कहा–
   (क) झूरी ने अपनी पत्नी से
   (ख) हीरा ने मोती से
   (ग) गया ने हीरा-मोती से
   (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।
7. पशुओं में ऐसा कौन-सा गुण होता है जो मनुष्य में इनकी अपेक्षा कम होता है–
   (क) मन के भावों को समझ लेना
   (ख) दूसरों से काम लेना
   (ग) अच्छे-बुरे में भेद करना
   (घ) अपना मतलब निकालना।
8. कांजीहौस से हीरा और मोती को किसको बेचा गया–
   (क) सड़ियल को (ख) अड़ियल को
   (ग) दढ़ियल को (घ) चौधरी को।
9. हीरा-मोती की मदद उनके गले में बँधी रस्सी खोलकर किसने की–
   (क) झूरी ने
   (ख) स्वयं हीरा-मोती ने
   (ग) चौधरी ने
   (घ) छोटी लड़की ने।
10. किस बात के अनुसार हीरा-मोती कायर कहलाते–
    (क) यदि वे साँड से डरकर नहीं भागते।
    (ख) यदि वे दोनों किसी के भी खेत में जाकर मटर खा लेते
    (ग) यदि वे दिनभर भूखे रहते
    (घ) यदि वे साँड से डरकर भाग जाते।
11. गधे के किन गुणों ने उसे ऋषि-मुनियों की पदवी दे दी है–
    (क) सीधापन
    (ख) सहनशक्ति
    (ग) त्याग
    (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।
12. गधा एक-आध बार कुलेल कब कर लेता है–
    (क) वैशाख महीने में
    (ख) चैत्र महीने में
    (ग) सावन महीने में
    (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।
13. कांजीहौस में कैद पशुओं की हाजिरी क्यों ली जाती थी–
    (क) कोई पशु भाग तो नहीं गया
    (ख) कोई पशु घट तो नहीं गया
    (ग) कोई पशु मर तो नहीं गया
    (घ) उपर्युक्त सभी।
14. कांजीहौस में हाजिरी लेने कौन आया था–
    (क) गया (ख) दढ़ियल
    (ग) झूरी (घ) चौकीदार।
15. साँड क्या करता हुआ हीरा-मोती की ओर आ रहा था–
    (क) डकारता हुआ (ख) घूमता हुआ
    (ग) डाँकता हुआ (घ) घूरता हुआ।
16. गाँव के इतिहास में कौन-सी घटना अभूतपूर्व थी–
    (क) बैलों का नाचना
    (ख) बैलों का अपने आप घर आ जाना
    (ग) बैलों का रोना
    (घ) बैलों का बेचा जाना।
17. लड़की ने बैलों को क्यों खोल दिया–
    (क) उसे बैलों से घृणा थी (ख) उसे बैलों से प्रेम था
    (ग) उसे बैलों से सहानुभूति थी (घ) इनमें से कोई नहीं।
18. पाठ में 'बछिया का ताऊ' किसे कहा गया है–
    (क) बैल को (ख) गधे को
    (ग) घोड़े को (घ) साँड को।
19. लावारिस आवारा पशुओं को कहाँ रखा जाता था–
    (क) धर्मशाला में (ख) कांजीहौस में
    (ग) चिड़ियाघर में (घ) पशुशाला में।
20. झूरी की पत्नी ने हीरा-मोती को नमक हराम क्यों कहा–
    (क) वे काम नहीं करते थे
    (ख) वे अधिक भूसा खाते थे
    (ग) वे उसके भाई गया के घर से भाग आए थे
    (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

उत्तर– **1.** (क) **2.** (ग) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (ग) **6.** (ख) **7.** (क) **8.** (ग) **9.** (घ) **10.** (घ) **11.** (ख) **12.** (क) **13.** (क) **14.** (घ) **15.** (ग) **16.** (ख) **17.** (ग) **18.** (क) **19.** (ख) **20.** (ग)।

भाग-2

(वर्णनात्मक प्रश्न)

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : 'दो बैलों की कथा' पाठ में बैलों के क्या नाम हैं?

उत्तर : 'दो बैलों की कथा' पाठ में बैलों के नाम हीरा और मोती हैं।

प्रश्न 2 : कहानी में गधा किसका पर्याय माना गया है?

उत्तर : कहानी में गधा 'मूर्ख' का पर्याय माना गया है।

प्रश्न 3 : 'बछिया का ताऊ' किसे कहा गया है?

उत्तर : 'बछिया का ताऊ' बैल को कहा गया है।

प्रश्न 4 : बैलों के मालिक का क्या नाम था? उसने बैलों को कहाँ भेज दिया?

उत्तर : बैलों के मालिक का नाम झूरी था। उसने बैलों को अपने साले गया के घर भेज दिया।

प्रश्न 5 : बैल गया के घर से क्यों भागे?

उत्तर : गया बैलों पर अत्याचार करता था तथा उन्हें भूखा-प्यासा रखता था, इसलिए बैल उसके घर से भाग गए।

प्रश्न 6 : बैलों की गया के घर से भाग जाने में किसने सहायता की?

उत्तर : बैलों की गया के घर से भाग जाने में भैरो की लड़की ने सहायता की। उसने रात के समय बैलों के रस्से खोल दिए।

प्रश्न 7 : बैलों का युद्ध किसके साथ हुआ? उसका क्या परिणाम हुआ?

उत्तर : बैलों का युद्ध एक साँड के साथ हुआ, जिसमें उन्होंने साँड को मारकर भगा दिया।

प्रश्न 8 : गया के घर से भागे हुए बैलों का क्या परिणाम हुआ?

उत्तर : गया के घर से भागे हुए हीरा-मोती बैलों को पकड़कर कांजीहौस में बंद कर दिया गया।

प्रश्न 9 : कांजीहौस में से दोनों बैलों को किसने खरीदा?

उत्तर : कांजीहौस में से दोनों बैलों को एक दढ़ियल कसाई ने खरीद लिया।

प्रश्न 10 : कहानी के अंत में बैलों का क्या परिणाम हुआ?

उत्तर : कहानी के अंत में बैल दढ़ियल के हाथों से छूटकर भाग निकले और अपने मालिक झूरी के घर पहुँच गए। वहाँ दढ़ियल और झूरी में आपस में नोक-झोंक हुई। अंत में मोती ने दढ़ियल को अपने सींगों से मारकर भगा दिया।

प्रश्न 11 : कांजीहौस में कैद पशुओं की हाज़िरी क्यों ली जाती होगी?

उत्तर : कांजीहौस का मालिक उन पशुओं के वास्तविक मालिकों से उनके रख-रखाव पर आने वाले खर्च के अतिरिक्त कर के रूप में भी कुछ धनराशि उस समय वसूलता था, जब वे उसे कांजीहौस से लेने आते थे। जिस पशु का मालिक उसे लेने नहीं आता था तो कांजीहौस वाले कुछ दिन प्रतीक्षा करने के बाद उसकी नीलामी करके बेच देते थे। इस प्रकार वे पशु ही उनकी आमदनी का साधन थे। यदि कोई पशु वहाँ से निकल भागेगा अथवा कांजीहौस का कोई कर्मचारी उन्हें वहाँ से चुरा लेगा तो इससे कांजीहौस के मालिक को हानि होगी। इसी हानि से बचने और पशुओं की निगरानी के लिए कांजीहौस में कैद पशुओं की हाज़िरी ली जाती होगी।

प्रश्न 12 : छोटी बच्ची के मन में बैलों के प्रति प्रेम क्यों उमड़ आया?

उत्तर : छोटी बच्ची गया के भाई भैरो की थी। उसकी माँ मर चुकी थी। सौतेली माँ उस पर अत्याचार करती थी। बैलों पर भी ऐसा ही अत्याचार किया जा रहा था। इसलिए उसे बैलों से सहानुभूति हो गई और उसके मन में उनके प्रति प्रेम उमड़ आया।

प्रश्न 13 : किन घटनाओं से पता चलता है कि हीरा-मोती में गहरी दोस्ती थी?

उत्तर : निम्नलिखित घटनाओं से पता चलता है कि हीरा-मोती में गहरी दोस्ती थी–

(i) दोनों एकसाथ उठते-बैठते, एकसाथ नाँद में मुँह डालते और हटाते थे।

(ii) एक-दूसरे को चाटकर और सींग लड़ाकर अपना प्रेम प्रदर्शित करते थे।

(iii) हल या गाड़ी में जोते जाने पर दोनों एक-दूसरे का बोझ अपनी गरदन पर लेने का प्रयास करते थे।

(iv) विशालकाय साँड का मुकाबला दोनों ने एकसाथ मिलकर किया।

(v) जब मोती मटर के खेत में फँस गया तो हीरा उसे छोड़कर नहीं भागा। इसी प्रकार जब हीरा कांजीहौस में बाँध दिया गया तो मोती भी उसे अकेला छोड़कर नहीं भागा।

प्रश्न 14 : कहानी में बैलों के माध्यम से कौन-से नीति-विषयक मूल्य उभारे गए हैं?

उत्तर : कहानी में निम्नलिखित नीति-विषयक मूल्य उभारे गए हैं–

(i) अधिक सीधापन और अधिक सहनशीलता मूर्खता है।

(ii) आज़ादी के लिए संघर्ष करना पड़ता है।

(iii) विपत्ति में पड़े मित्र को अकेला नहीं छोड़ना चाहिए।

(iv) बलवान् शत्रु का मुकाबला संगठित होकर करना चाहिए।

(v) स्त्री पर अत्याचार नहीं करना चाहिए।

(vi) जान ज़ोखिम में डालकर भी परोपकार करना चाहिए।

(vii) अपने मालिक के प्रति वफ़ादार रहना चाहिए।

प्रश्न 15 : 'लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूले जाते हो।'– हीरा के इस कथन के माध्यम से स्त्री के प्रति प्रेमचंद के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : हीरा के इस कथन से पता चलता है कि प्रेमचंद के मन में स्त्री के प्रति अत्यधिक सहानुभूति और सम्मान की भावना थी। उन्हें पता था कि समाज में स्त्रियों की दशा दयनीय है और वे अबला हैं; अतः उनपर अत्याचार करना पाप है। इस कथन के द्वारा प्रेमचंद सभ्य समाज को स्त्रियों के प्रति कर्त्तव्य की याद दिलाना चाहते हैं।

प्रश्न 16 : किसान जीवन वाले समाज में पशु और मनुष्य के आपसी संबंधों को कहानी में किस तरह व्यक्त किया गया है?

उत्तर : किसान के जीवन में पशुओं का बहुत महत्त्व है। उसके सभी कार्य पशुओं द्वारा ही पूर्ण होते हैं। वह अपने पशुओं को अपने परिवार का अंग मानता है और उन्हें बहुत प्रेम करता है। पशु भी किसान से बहुत लगाव रखते हैं। प्रस्तुत पाठ में झूरी एक किसान है। उसके दो बैल हैं, जिन्हें वह बहुत प्रेम करता है। उसने उनके हीरा-मोती नाम रखे हैं। बैल भी उसे बहुत प्रेम करते हैं और उसके बिना नहीं रह पाते। रिश्तेदारी में भेज दिए जाने पर वे वहाँ से भागकर झूरी के पास वापस आ जाते हैं। इस प्रकार किसान और उसके पशुओं में बहुत ही घनिष्ठ संबंध होता है।

प्रश्न 17 : 'इतना तो हो ही गया कि नौ-दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगे।' मोती के इस कथन के आलोक में उसके चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर : मोती हृदय से दयालु, किंतु गरम स्वभाव का प्राणी है। अन्याय होता देख उसका खून खौल उठता है। अत्याचारी से भिड़ने को वह जैसे जान हथेली पर लिए फिरता है। कांजीहौस में पहुँचने पर वहाँ कैद पशुओं की दुर्दशा देख उन्हें मुक्त कराने के लिए उसने बाड़े की दीवार तोड़ डाली। हीरा ने उसे जब यह समझाया कि अब तुझ पर मुसीबतें आएँगी, तुझे मोटी रस्सियों से बाँधा जा सकता है तो इस पर मोती बड़ी शान से जवाब देता है कि ऐसा बंधन उसे कबूल है। यदि उसके बँधने से दस जानें बचती हैं तो उसे यह भी स्वीकार है। वह मानता है कि जिन पशुओं की जानें उसके कारण बच गई, वे सब-के-सब उसे आशीर्वाद देंगे। मोती के इस प्रकार के व्यवहार से उसकी दयालुता, बलिदान की भावना तथा न्यायप्रियता का बोध होता है।

प्रश्न 18 : 'दो बैलों की कथा' पाठ में 'कांजीहौस का चित्रण अंग्रेज़ी शासनकाल की जेलों में भारतीयों पर होने वाले अत्याचार का अप्रत्यक्ष चित्रण है। कैसे?

उत्तर : यह कहानी परतंत्र भारत की जनता के दुःखों को व्यक्त करने के उद्देश्य से कथाकार ने लिखी है। कांजीहौस में आवारा पशु रखे जाते हैं। इसके मालिक पशुओं के साथ क्रूरता का व्यवहार

करते हैं। कांजीहौस के मालिकों की क्रूरता दिखाकर प्रेमचंद जी ने अंग्रेज़-शासकों की क्रूरता की ओर संकेत किया है। अपने ही देश में भारतीयों को घूमने-फिरने, खेलने-खाने के लिए क्रूर अंग्रेज़-शासकों के इशारों पर चलना पड़ता था। विरोध करने पर उन्हें जेलों में बंद कर दिया जाता था, भूखा-प्यासा रखा जाता था। भारतीय विद्रोही कांजीहौस के पशुओं की तरह भूखे-प्यासे रहकर भी आज़ादी का सपना देखते थे। जैसे हीरा-मोती कांजीहौस से निकल भागने का मार्ग खोज रहे थे। इस प्रकार घटनाओं और स्थितियों की समानता से यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि यह चित्रण अंग्रेज़ों की जेलों की ओर संकेत करता है।

प्रश्न 19 : हीरा और मोती ने शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाई, लेकिन उसके लिए प्रताड़ना भी सही। हीरा-मोती की इस प्रतिक्रिया पर तर्कसहित अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर : मेरा विचार है कि हीरा और मोती ने अन्याय का विरोध करके उचित ही किया। यदि वे ऐसा न करते तो उनका और भी शोषण होता रहता। वे जीवनभर गुलामी की जंजीरों में जकड़े रहते। व्यथा कभी भी न कह पाने से मालिक उन पर अत्याचार करता रहता। विरोध करने से मालिक को एक प्रकार से चेतावनी मिल गई कि शोषण के दिन अब लद गए। उसे अपना रवैया बदलना पड़ेगा। फिर अत्याचारों से मुक्ति प्राप्त करने के लिए संघर्ष करने पर ही उन अत्याचारों से मुक्ति मिल सकती है। यदि यातना से डरकर विरोध न किया जाए तो मुक्ति किसी भी प्रकार संभव नहीं है, वरन् कभी भी अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ सकता है। यदि हीरा और मोती अत्याचारों का प्रतिकार न करते तो वे गया के खूँटे पर दम तोड़ देते अथवा कसाई के हाथों मारे जाते। उन्होंने निडर होकर अपने शोषण और अत्याचारों का विरोध किया तो अंत में स्वतंत्रता ने उनका वरण भी किया। इसलिए व्यक्ति को सदैव शोषण का विरोध करना चाहिए।

प्रश्न 20 : क्या आपको लगता है कि 'दो बैलों की कथा' कहानी आज़ादी की लड़ाई की ओर संकेत करती है?

उत्तर : हाँ, यह कहानी हमारी आज़ादी की लड़ाई की ओर संकेत करती है। इस कहानी में हीरा-मोती दो बैल हैं, जो अपनी आज़ादी के लिए संघर्ष करते हैं। हीरा अहिंसावादी विचारधारा का समर्थक है, जबकि मोती क्रांतिकारी विचारधारा वाला है। दोनों आज़ादी के लिए अनेक कष्ट उठाते हैं। कांजीहौस की यातना सहते हैं, बधिक के हाथों में पड़ जाते हैं, लेकिन अंत में आज़ादी प्राप्त कर लेते हैं। हमारी आज़ादी की लड़ाई में भी स्वतंत्रता सेनानियों के दो दल थे–अहिंसावादी और क्रांतिकारी। दोनों ने मिलकर संघर्ष किया, बलिदान दिए, जेलों की यातनाएँ सहीं, लेकिन अंत में आज़ादी प्राप्त कर ली। इस प्रकार यह कहानी हमारी आज़ादी की लड़ाई की ओर संकेत करती है।

प्रश्न 21 : आशय स्पष्ट कीजिए–

(i) अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है।

(ii) उस एक रोटी से उनकी भूख तो क्या शांत होती; पर दोनों के हृदय को मानो भोजन मिल गया।

उत्तर : (i) **आशय**–हीरा और मोती में एक ऐसी छिपी हुई शक्ति थी, जिसके बल पर वे एक भी शब्द बोले बिना, आँखों-आँखों में एक-दूसरे के हाव-भाव से एक-दूसरे के हृदय की बात जान लेते थे। वे सदैव आपस में एक-दूसरे के हित की बात सोचते थे। वे मौनभाषा में भी प्यार प्रदर्शन करना जानते थे। मनुष्य स्वयं को संसार का सर्वश्रेष्ठ प्राणी कहता है, परंतु उसमें भी यह शक्ति नहीं होती।

(ii) **आशय**–हीरा और मोती गया के घर जब से आए थे, तब से उन्हें पेटभर खाने को नहीं मिला था। अपने बैलों को उसने भूसा, खली, चूनी सब दिया और इनको केवल सूखा भूसा दिया। वे व्यथित थे। तभी एक लड़की ने आकर उन्हें एक-एक रोटी खाने को दी। भयंकर भूख से पीड़ित बैलों की भूख तो इतनी-सी रोटी से नहीं मिट सकती थी, परंतु बैलों का उस नन्हीं बच्ची की सहानुभूति से हृदय भर गया। उन्हें संतोष इस बात का हुआ कि यहाँ भी कोई उनका हितैषी है। वे प्रेम के भूखे थे। उनके प्रेम-पिपासु हृदय को लड़की ने एक ही रोटी से तृप्त कर दिया।

प्रश्न 22 : सच्चे मित्रों की क्या पहचान होती है? क्या हीरा-मोती सच्चे मित्र हैं?

उत्तर : सच्चे मित्र प्रेम से हिल-मिलकर रहते हैं। प्यार की उमंग में भरकर वे कभी-कभी चुहलबाजी भी करते हैं। कभी-कभी धौल-धप्पा, शरारत या किलोल भी कर लेते हैं। इन हल्के-फुल्के क्षणों से प्रेम परिपक्व होता है। वे गहरे मित्र बनते हैं। प्रेमचंद ने इस खेल को सच्ची मित्रता के लिए बड़ा आवश्यक माना है।

हीरा और मोती बड़े पक्के मित्र हैं। उनमें एक-दूसरे के लिए गहरा प्रेम है। वे साथ खाते-पीते हैं। प्रेम-प्रदर्शन में एक-दूसरे को सूँघते-चाटते हैं। खेल-खेल में एक-दूसरे को ढकेलते हैं, सींग भिड़ाते हैं। कभी-कभी ज़ोर आजमाइश भी करते हैं, परंतु झगड़ा होने से पहले पीछे हट जाते हैं।

वे सच्ची मित्रता का प्रदर्शन भी करते हैं। एक बार ही नहीं, अनेक बार वे एक-दूसरे का बोझ कम-से-कम करने का प्रयास करते हैं। संकट पड़ने पर एक खुद को संकट में डाल दूसरे की रक्षा करता है; जैसे–साँड का मुकाबला कर दोनों ने उसे अधमरा करके छोड़ा।

प्रश्न 23 : हीरा-मोती को गया के साथ जाना क्यों स्वीकार न था? उन्होंने अपना विरोध किस प्रकार प्रकट किया?

उत्तर : हीरा और मोती स्वाभिमानी और स्वामिभक्त बैल थे। वे अपने मालिक झूरी के यहाँ हर दशा में प्रसन्न थे। वे खूब मन लगाकर काम भी करते थे। गया के साथ जाना उन्हें बिलकुल अच्छा इसलिए नहीं लग रहा था, क्योंकि उन्हें लगा कि स्वामी ने उनकी कोई कमी देखकर ही उन्हें गया के हाथों बेच दिया है। उनके मन में रोष था, इसलिए उन्होंने गया के साथ जाना स्वीकार न किया।

प्रश्न 24 : झूरी की पत्नी ने हीरा-मोती को नमकहराम क्यों कहा?

उत्तर : झूरी की पत्नी ने अपने भाई गया के घर अपने बैलों की जोड़ी भेजी थी, परंतु वे वहाँ से रात में ही भाग आए। हीरा और मोती का वहाँ से इस प्रकार भाग आना उसे अच्छा नहीं लगा। उसने इसे अपना अपमान माना। उसने गुस्से में उन्हें 'नमकहराम' तक कह डाला, क्योंकि उसे लगा कि हमारे बैलों ने हमारे ही द्वारा भेजे गए स्थान पर न टिककर हमारी ही खिलाफ़त की है। ये कामचोर हैं।

प्रश्न 25 : हीरा और मोती में से कौन अधिक सहनशील है?

अथवा

''हीरा गांधी जी का अहिंसावादी सहनशील शिष्य है।'' सिद्ध कीजिए।

उत्तर : हीरा और मोती में से अधिक सहनशील हीरा है। कथाकार प्रेमचंद ने कहानी में एक स्थान पर स्वयं यह लिखा है–

''दो-चार बार मोती ने गाड़ी को सड़क की खाई में गिराना चाहा; पर हीरा ने सँभाल लिया। वह ज़्यादा सहनशील था।''

दूसरी बात जब हीरा की नाक पर गया ने डंडे बरसाए, जिन्हें वह तो सहन कर गया, परंतु मोती हल, जुआ, जोत, रस्सी सब लेकर सरपट दौड़ा और सबकुछ तोड़-ताड़कर रख दिया। मोती के मन में इतना गुस्सा आया कि वह गया और उसके साथियों को मार गिराता, परंतु हीरा ने उसके मन की बात जान ली और मौनभाषा में ही उसने ऐसा करने से मना कर दिया।

अन्यायी के सामने अन्यायी-सा पलटवार करना उसे पसंद नहीं, परंतु अन्याय के विरोध में लगातार संघर्ष करते रहने से वह जी नहीं चुराता। धीरज का उसमें सागर लहराता है। उसे विश्वास है कि लगातार संघर्ष से कष्ट अवश्य कटेंगे।

हीरा का धैर्य उसके कांजीहौस के प्रकरण में भी दृष्टिगोचर होता हैं। कांजीहौस की दीवार तोड़ते हुए पकड़ा जाने पर उसे मोटी रस्सियों से बाँध दिया जाता है, तब वह मोती से कहता है–

''ज़ोर तो मारता ही जाऊँगा, चाहे कितने ही बँधन पड़ते जाएँ।''

गया के साथ जाने में वह जिस प्रकार मौन असहयोग दिखाता हैं, उससे भी यह बात सिद्ध होती है कि हीरा गांधी जी का अहिंसावादी, सहनशील शिष्य है।

प्रश्न 26 : हीरा और मोती के चरित्र की तुलना कीजिए।

उत्तर : हीरा और मोती यों तो सच्चे मित्र हैं, परंतु उनके चरित्र में बड़ा अंतर भी दिखाई देता है।

हीरा मोती से अधिक धैर्यवान् है। मोती गाड़ी को खाई में गिराना चाहता है तो हीरा ही सँभालता है। नाक पर डंडे पड़ते हैं तो हीरा सहन कर लेता है पर मोती हल, जुआ, जोत, रस्सी सब लेकर दौड़ पड़ता है और सब तोड़-ताड़ देता है। मोती गया के साथियों को मारकर भगाना चाहता है, परंतु हीरा उसे संयम बरतने को कहता है। इसी प्रकार नन्हीं बच्ची के प्रति हीरा के प्रेम और समझदारी ने ही मोती को मालकिन को पटक देने के विचार से भी रोका। मोती क्रोध में होश खो बैठता है, लेकिन हीरा नहीं; अतः हीरा नरम स्वभाव का सहनशील बैल है, जबकि मोती गरम स्वभाव का आवेश में जल्दी आ जाने वाला बैल है।

प्रश्न 27 : गया के घर से भाग आने पर हीरा-मोती का गाँव में कैसा स्वागत हुआ?

उत्तर : हीरा और मोती गया के घर से पगहा तुड़ाकर झूरी के पास वापस आ गए। उन्हें अपने थान पर खड़ा देख सबसे पहले झूरी ने उनको गले लगाकर उनका हार्दिक स्वागत किया। उसने बार-बार उन्हें चूमकर अपना प्यार दिया। गाँव के बच्चों ने जब दोनों बैलों को वापस आया देखा तो तालियाँ बजा-बजाकर वे उनका अभिनंदन करने लगे। कोई उनके लिए रोटियाँ लाया तो कोई गुड़, कोई चोकर तो कोई भूसी। इस प्रकार दोनों बैलों का गाँव-घर में अच्छा स्वागत हुआ।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

अपना यों बेचा जाना उन्हें अच्छा लगा या बुरा, कौन जाने, पर झूरी के साले गया को घर तक गोईं ले जाने में दाँतों पसीना आ गया। पीछे से हाँकता तो दोनों दाएँ-बाएँ भागते, पगहिया पकड़कर आगे से खींचता तो दोनों पीछे को ज़ोर लगाते। मारता तो दोनों सींग नीचे करके हुँकारते। अगर ईश्वर ने उन्हें वाणी दी होती तो झूरी से पूछते–तुम हम गरीबों को क्यों निकाल रहे हो? हमने तो तुम्हारी सेवा करने में कोई कसर नहीं उठा रखी। अगर इतनी मेहनत से काम न चलता था तो और काम ले लेते। हमें तो तुम्हारी चाकरी में मर जाना कबूल था। हमने कभी दाने-चारे की शिकायत नहीं की। तुमने जो कुछ खिलाया, वह सिर झुकाकर खा लिया, फिर तुमने हमें इस ज़ालिम के हाथ क्यों बेच दिया?

1. बैलों को किसके साथ भेज दिया गया–

(क) झूरी के भाई के साथ (ख) झूरी के मित्र के साथ
(ग) झूरी के साले के साथ (घ) झूरी के मामा के साथ।

2. गया जब बैलों को पीछे से हाँकता तो वे क्या करते थे–

(क) तेज़ी से आगे को दौड़ते (ख) दाएँ-बाएँ भागते
(ग) खड़े हो जाते (घ) सींग नीचे करके हुँकारते।

3. यदि ईश्वर ने हीरा-मोती को वाणी दी होती तो वे झूरी से क्या पूछते–

(क) तुम हम गरीबों को क्यों निकाल रहे हो?
(ख) हमने तुम्हारी सेवा में क्या कसर रखी है?
(ग) हमने कभी दाने-चारे की शिकायत नहीं की।
(घ) उपर्युक्त सभी।

4. हीरा और मोती ने गया को पूरे रास्ते परेशान क्यों किया–

(क) उन्हें लगा उनके मालिक (झूरी) ने उन्हें गया को बेच दिया है।
(ख) हीरा और मोती को गया अच्छा इंसान नहीं लगा था।
(ग) हीरा और मोती को वह रास्ता मालूम नहीं था।
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

5. 'दाँतों पसीना आना' मुहावरे का अर्थ है–

(क) थक जाना (ख) बहुत परिश्रम करना
(ग) हार जाना (घ) इच्छा पूरी होना।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

6. ''यह हमारी जाति का धर्म नहीं है'' यह कथन किसने और किससे कहा–

(क) झूरी ने अपनी पत्नी से
(ख) हीरा ने मोती से
(ग) गया ने हीरा-मोती से
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

7. हीरा-मोती की मदद उनके गले में बँधी रस्सी खोलकर किसने की–

(क) झूरी ने
(ख) स्वयं हीरा-मोती ने
(ग) चौधरी ने
(घ) छोटी लड़की ने।

8. गाँव के इतिहास में कौन-सी घटना अभूतपूर्व थी–

(क) बैलों का नाचना
(ख) बैलों का अपने आप घर आ जाना
(ग) बैलों का रोना
(घ) बैलों का बेचा जाना।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. बैलों के मालिक का क्या नाम था? उसने बैलों को कहाँ भेज दिया?

10. कांजीहौस में कैद पशुओं की हाज़िरी क्यों ली जाती होगी?

11. किसान जीवन वाले समाज में पशु और मनुष्य के आपसी संबंधों को कहानी में किस तरह व्यक्त किया गया है?

12. हीरा-मोती को गया के साथ जाना क्यों स्वीकार न था? उन्होंने अपना विरोध किस प्रकार प्रकट किया?